

#childinnovation जयपुर आए वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. आर.ए. माशेलकर बोले

'बच्चों को रोके नहीं, तोड़-फोड़ करने दें तभी होगा इनोवेशन'



पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

बच्चों की ग्रोथ के लिए यह जरूरी

जयपुर में लक्ष्मीपत यूनिवर्सिटी में आयोजित कार्यक्रम में शामिल होने आए माशेलकर ने बच्चों की ग्रोथ के लिए 'लर्निंग बाय ड्रइंग-लर्निंग बाय क्रिएटिंग' पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि शिक्षा, शोध और इनोवेशन तीन महत्वपूर्ण कड़ियाँ हैं। शिक्षा से ज्ञान का विस्तार, शोध से नया ज्ञान और इनोवेशन से भौतिक संपन्नता मिलती है। माशेलकर पद्मश्री, पद्म भूषण व पद्म विभूषण से सम्मानित हैं और ख्यात वैज्ञानिक व राष्ट्रपति रहे डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के साथ काम किया है।



क्यूआर कोड स्कैन करें
और देखें बच्चे कैसे
बनेंगे इनोवेटिव

जयपुर, देश के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. आर.ए. माशेलकर का कहना है कि बच्चों को जोड़-तोड़-फोड़ कंसेप्ट पर काम करने दें तभी उनके कदम रिसर्च और इनोवेशन की तरफ बढ़ेंगे। तोड़ना और उसी को फिर तैयार करना ही इनोवेशन की पहली सीढ़ी है। इसे माता-पिता को समझना चाहिए। मैं और मेरे जैसे कई वैज्ञानिक भी इसी दौर से गुजरे हैं।



2020 को मैं
लिए 'ईयर ऑफ
इंडियन साइंस' कहूंगा

■ 'लर्निंग बाय ड्रइंग-
लर्निंग बाय क्रिएटिंग'
से होगी बच्चों की ग्रोथ

टारगेट नेक्स्ट प्रैक्टिस हो

आपमें पुराने को और बेहतर बनाने की लालसा होगी तो ही आगे बढ़ेंगे। इसलिए बेस्ट प्रैक्टिस की बाद टारगेट 'नेक्स्ट प्रैक्टिस' की तरफ होना चाहिए। तभी तो कैंसर, ब्लडशुगर टेस्ट हो या फिर

कोई और...नेक्स्ट प्रैक्टिस पर विश्वास करने वाले बच्चे इसे अफोर्डेबल बनाते जा रहे हैं। लक्ष्य को पा लिया और उसे ही बेस्ट परिणाम समझ लिया तो न केवल आपकी ग्रोथ रुक जाएगी, बल्कि

देश की तरक्की में भी रुकावट बनेंगे। टेलेंट, टेक्नोलॉजी, ट्रस्ट के माध्यम से विज्ञान में बहुत तरक्की की जा सकती है। बस, युवाओं पर विश्वास करने की आवश्यकता है।

हल्दी-चावल का पेटेंट रुकवाया

हल्दी और बासमती चावल का पेटेंट दूसरे देश की कंपनी ने करा लिया। उस हल्दी को, जिसकी उपयोगिता हमारे पूर्वजों की देन है और उन्होंने बतौर औषधि इसे स्थापित किया। हल्दी का ज्ञान हमारे मस्तिष्क और ग्रंथों में तो था, लेकिन उसका डिजिटल फार्मेट मौजूद नहीं था। इसी का फायदा उठाते

हुए नामी विदेशी कंपनी ने हल्दी और बासमती चावल का पेटेंट ले लिया। इसके बाद लंबी लड़ाई लड़नी पड़ी और पेटेंट कैसिल कराया। इससे सबक लिया और 3 करोड़ से ज्यादा पत्रों का डिजिटलीकरण किया। इसके बाद डॉ. अब्दुल कलाम मुझे 'मिस्टर पेटेंटर' कहकर पुकारा।

कर्म खर्च में देते हैं बढ़िया तकनीक

वर्ष 2020 को भले ही ईयर ऑफ पेंडेमिक कहते हों, लेकिन मैं भारत के लिए इसे 'ईयर ऑफ इंडियन साइंस' कहूंगा। इसी दौरान हमारे साइंटिस्ट ने कई नवाचार किए। चीन से डायमोस्टिक लेते थे, जिसमें वह खराब उत्पाद भी सप्लाय करता

था। लेकिन उसमें भी केवल 6 सप्ताह में आगे बढ़े और अब आत्मनिर्भर बन गए। मैं कहूंगा कि विज्ञान में सतत निवेश होना चाहिए। कर्म खर्च में बढ़िया तकनीक बनाने में हमारी खुशी है। पारंपरिक ज्ञान और मॉडल साइंस को एक जगह लाना है।